**अध्याय 1: जयशंकर प्रसाद (देवसेना का गीत और कार्नेलिया का गीत) - महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर**

**1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)**

1. **'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के किस नाटक से लिया गया है?**
    - **(क) चंद्रगुप्त**
    - **(ख) स्कंदगुप्त**
    - **(ग) ध्रुवस्वामिनी**
    - **(घ) अजातशत्रु**
    - **उत्तर: (ख) स्कंदगुप्त**
2. **देवसेना किसकी बहन थी?**
    - **(क) स्कंदगुप्त की**
    - **(ख) बंधुवर्मा की**
    - **(ग) पर्णदत्त की**
    - **(घ) सेल्युकस की**
    - **उत्तर: (ख) बंधुवर्मा की**
3. **कार्नेलिया किसकी पुत्री थी?**
    - **(क) सिकंदर की**
    - **(ख) सेल्युकस की**
    - **(ग) स्कंदगुप्त की**
    - **(घ) चंद्रगुप्त की**
    - **उत्तर: (ख) सेल्युकस की**
4. **कार्नेलिया का गीत किस नाटक का प्रसिद्ध अंश है?**
    - **(क) स्कंदगुप्त**
    - **(ख) चंद्रगुप्त**

- (ग) राजश्री
- (घ) ध्रुवस्वामिनी
- उत्तर: (ख) चंद्रगुप्त

5. देवसेना ने अपना जीवन किस रूप में बिताया?
   - (क) राजमहिषी के रूप में
   - (ख) आश्रम में गाना गाकर और भीख माँगकर
   - (ग) एक योद्धा के रूप में
   - (घ) शत्रु की दासी के रूप में
   - उत्तर: (ख) आश्रम में गाना गाकर और भीख माँगकर
6. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' गीत में 'अरुण' का क्या अर्थ है?
   - (क) काला
   - (ख) पीला
   - (ग) लालिमा युक्त (सूर्य की लालिमा)
   - (घ) नीला
   - उत्तर: (ग) लालिमा युक्त
7. देवसेना ने स्कंदगुप्त के अनुनय-विनय को क्यों ठुकरा दिया?
   - (क) वह उससे घृणा करती थी
   - (ख) वह अब थक चुकी थी और वेदना से भरी थी
   - (ग) वह किसी और से प्रेम करती थी
   - (घ) स्कंदगुप्त ने उससे विवाह नहीं किया था
   - उत्तर: (ख) वह अब थक चुकी थी और वेदना से भरी थी
8. कार्नेलिया के अनुसार, अनजान क्षितिज को कहाँ सहारा मिलता है?
   - (क) यूनान में

- **(ख) भारत में**
- **(ग) समुद्र में**
- **(घ) आकाश में**
- **उत्तर: (ख) भारत में**

**9. 'मधुकरियों की भीख लुटाई' पंक्ति में 'मधुकरियों' का क्या अर्थ है?**

- **(क) शहद**
- **(ख) पकी हुई भिक्षा (पका हुआ अन्न)**
- **(ग) प्रेम के फूल**
- **(घ) कड़वी बातें**
- **उत्तर: (ख) पकी हुई भिक्षा**

**10.देवसेना के जीवन-रथ पर कौन सवार है?**

- **(क) विजय**
- **(ख) सुख**
- **(ग) प्रलय**
- **(घ) शांति**
- **उत्तर: (ग) प्रलय**

## 2. एक पंक्ति वाले प्रश्न (One Line Q&A)

**1. 'देवसेना का गीत' का मुख्य स्वर क्या है?**

- **उत्तर: इस गीत का मुख्य स्वर निराशा, वेदना और पश्चाताप है।**

**2. देवसेना ने 'भ्रमवश' क्या संचित किया था?**

- **उत्तर: देवसेना ने यौवन की कोमल कल्पनाओं और इच्छाओं को भ्रमवश संचित किया था।**

**3. कार्नेलिया के अनुसार भारत देश की सबसे बड़ी पहचान क्या है?**

- उत्तर: अनजान को सहारा देना और लहरों को किनारा प्रदान करना भारत की मुख्य पहचान है।

4. 'विहाग' किसे कहते हैं?
    - उत्तर: विहाग अर्द्धरात्रि में गाया जाने वाला एक राग है।
5. कार्नेलिया सिंधु नदी के तट पर बैठकर क्या अनुभव करती है?
    - उत्तर: वह भारत की प्राकृतिक सुंदरता और यहाँ की शांत स्निग्धता का अनुभव करती है।
6. स्कंदगुप्त किसका स्वप्न देखता था?
    - उत्तर: स्कंदगुप्त मालवा के धनकुबेर की कन्या 'विजया' का स्वप्न देखता था।
7. 'लघु सुरधनु से पंख पसारे' में 'सुरधनु' का क्या अर्थ है?
    - उत्तर: 'सुरधनु' का अर्थ इंद्रधनुष है, जो पक्षियों के रंगीन पंखों के लिए प्रयुक्त हुआ है।
8. देवसेना अपनी किस 'सकल कमाई' के खोने की बात करती है?
    - उत्तर: वह अपने यौवन के संघर्ष और संचित आशाओं रूपी कमाई के खोने की बात करती है।
9. कार्नेलिया के गीत में 'हेम कुंभ' किसे कहा गया है?
    - उत्तर: 'हेम कुंभ' (सोने का घड़ा) उगते हुए सूर्य को कहा गया है।
10. देवसेना की हार का मुख्य कारण क्या था?
    - उत्तर: हूणों के आक्रमण से परिवार का विनाश और स्कंदगुप्त के प्रेम में असफलता उसकी हार के कारण थे।

### 3. तीन पंक्ति वाले प्रश्न (Short Answer Q&A)

1. "मैंने भ्रम-वश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई" - इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
    - उत्तर: देवसेना कहती है कि उसने अपने जीवन भर जो भी आशाएँ और मधुर कल्पनाएँ संचित की थीं, उन्हें उसने अब भिक्षा के समान त्याग दिया है। उसने

स्वीकार किया कि जवानी में उसने जो सपने देखे थे, वे एक भ्रम थे, और अब वह उनसे मुक्त हो गई है।

2. कार्नेलिया के गीत में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है?
    - उत्तर: कार्नेलिया कहती है कि भारत सूर्य की लालिमा से भरा एक मीठा देश है। यहाँ हरियाली पर मंगल कुंकुम बिखरा रहता है और पक्षी अपने पंख फैलाकर यहाँ अपना प्यारा घर (नीड़) समझते हुए उड़ते हैं।
3. देवसेना ने अपनी आशा को 'बावली' क्यों कहा है?
    - उत्तर: देवसेना की आशा स्कंदगुप्त को पाने की थी, जो कभी पूरी नहीं हो सकी। वह मानती है कि यह आशा पागलपन (बावली) थी जिसने उसे जीवन भर संघर्षों और दुखों में रखा और अंत में उसे खाली हाथ छोड़ दिया।
4. "जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा" - इस पंक्ति का वैश्विक संदर्भ में क्या महत्व है?
    - उत्तर: यह पंक्ति भारत की 'अतिथि देवो भव:' और 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि जो लोग कहीं और स्थान नहीं पाते या जो अनजान राही हैं, उन्हें भी भारत अपनी शरण में लेकर सुरक्षा और स्नेह प्रदान करता है।
5. देवसेना की मानसिक स्थिति 'जीवन संध्या' की बेला में कैसी है?
    - उत्तर: जीवन के अंतिम पड़ाव पर देवसेना अत्यंत निराश और थकी हुई है। वह अपने पुराने संघर्षों को याद कर रोती है। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है और वह संसार से अपनी यादों की थाती वापस लेने की प्रार्थना करती है।
6. 'कार्नेलिया का गीत' में पक्षियों के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है?
    - उत्तर: पक्षी जिस ओर मुँह करके उड़ते हैं, उसे अपना नीड़ (घर) समझते हैं। यहाँ पक्षी उन विदेशियों या शरणार्थियों के प्रतीक हैं जो भारत को अपना सुरक्षित घर मानकर यहाँ सुख और शांति की तलाश में आते हैं।
7. "प्रलय चल रहा अपने पथ पर" - देवसेना इस संघर्ष को कैसे देखती है?

- उत्तर: देवसेना जानती है कि उसकी हार निश्चित है और प्रलय (विनाश) उसके साथ चल रहा है। फिर भी, वह अपनी दुर्बलताओं के बावजूद साहस के साथ प्रलय से मुकाबला करती है। वह एक हारी हुई बाजी को भी बहादुरी से खेलती है।

8. कार्नेलिया को भारतीय संगीत और यहाँ के वातावरण में क्या विशेष लगता है?
   - उत्तर: कार्नेलिया को यहाँ के वातावरण में एक 'प्रशांत स्निग्धता' महसूस होती है जो हृदय में उतर जाती है। उसे लगता है कि लंबी यात्रा के बाद उसे वास्तविक सुख का धाम मिल गया है, जो संगीत की लय जैसा आनंददायक है।
9. देवसेना ने स्कंदगुप्त का प्रस्ताव अंत में क्यों अस्वीकार कर दिया?
   - उत्तर: जब स्कंदगुप्त ने अंत में उसे अपनाना चाहा, तब तक देवसेना की सांसारिक इच्छाएँ मर चुकी थीं। वह अपनी बची हुई उम्र राष्ट्र सेवा और ईश्वर भक्ति में बिताना चाहती थी, इसलिए उसने कहा कि अब उसके लिए प्रेम की पुकार का कोई मूल्य नहीं है।
10. "हेम कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे" - इसमें कौन सा अलंकार और भाव है?
    - उत्तर: इसमें मानवीकरण अलंकार है। यहाँ उषा (भोर) को एक सुंदरी के रूप में दिखाया गया है जो सूर्य रूपी सोने के घड़े से सुखों को भारत की धरती पर बिखेर रही है। यह सुख और समृद्धि का भाव प्रकट करता है।

4. पाँच से छह पंक्ति वाले प्रश्न (Long Answer Q&A)
1. 'देवसेना का गीत' कविता में निहित करुणा और वेदना के तत्वों का विश्लेषण कीजिए।
   - उत्तर: यह कविता देवसेना के टूटे हुए हृदय की पुकार है। उसने अपनी जवानी में जो त्याग और संघर्ष किए, उनका उसे कोई मधुर फल नहीं मिला। हूणों के आक्रमण ने उसके परिवार को नष्ट कर दिया और स्कंदगुप्त ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया। कविता में 'मधुकरियों की भीख', 'श्रमित स्वप्न', और 'आँसू-से गिरते थे प्रतिक्षण' जैसे शब्द उसकी गहरी पीड़ा को व्यक्त करते हैं। वह अपने अतीत की नादानियों पर पश्चाताप करती है। अंत में, वह समाज की प्यासी

निगाहों से खुद को बचाना चाहती है और अपनी लाज गँवाने का डर महसूस करती है। यह कविता व्यक्तिगत दुख को मानवीय संवेदना के उच्चतम स्तर तक ले जाती है।

2. कार्नेलिया के गीत के आधार पर जयशंकर प्रसाद के राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक गौरव पर प्रकाश डालिए।

    - उत्तर: जयशंकर प्रसाद ने कार्नेलिया (एक विदेशी पात्र) के माध्यम से भारत की महानता का गान किया है। यह उनकी एक कलात्मक युक्ति है जो सिद्ध करती है कि भारत का आकर्षण वैश्विक है। गीत में भारत को एक ऐसा देश बताया गया है जहाँ सूर्य की पहली किरणें पड़ती हैं और जो ज्ञान व शांति का केंद्र है। यहाँ की नदियाँ, हरियाली और पक्षियों का बसेरा–सब कुछ एक दिव्य शांति का प्रतीक है। प्रसाद जी ने 'अनजान को सहारा' और 'लहरों को किनारा' जैसे बिंबों से भारत की उदार संस्कृति और शरणार्थी वत्सलता को रेखांकित किया है, जो उनके अगाध राष्ट्रप्रेम को दर्शाता है।

3. "अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है" - स्कंदगुप्त नाटक के इस मूल भाव को देवसेना के गीत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

    - उत्तर: देवसेना का गीत अधिकार और सुख के पीछे भागने के निरर्थक प्रयास की कहानी है। देवसेना ने जवानी में जिस सुख और प्रेम का अधिकार चाहा था, वह उसे नहीं मिला। वह अंत में समझती है कि संसार की इच्छाएँ और आशाएँ एक मायाजाल हैं जो मनुष्य को केवल थकाती हैं। उसने जो 'सकल कमाई' खोई, वह वास्तव में उसकी भावनात्मक पूँजी थी। जब स्कंदगुप्त अंत में उसे अधिकार देना चाहता है, तो उसे वह 'सारहीन' (बेकार) लगता है। यह भाव मनुष्य को सांसारिक मोह त्याग कर आत्मिक शांति और सेवा की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

4. 'कार्नेलिया का गीत' में प्रयुक्त प्रमुख बिंबों (Images) और उनके अर्थों पर चर्चा कीजिए।

    - उत्तर: इस गीत में प्रसाद जी ने बहुत ही सुंदर बिंबों का प्रयोग किया है। 'अरुण मधुमय देश' भारत की स्वर्णिम छवि को दर्शाता है। 'लघु सुरधनु से पंख' पक्षियों की चंचलता और रंगीन प्रकृति का प्रतीक है। 'बरसाती आँखों के बादल' भारतीयों की करुणा और दयालुता को स्पष्ट करते हैं कि यहाँ के लोग

दूसरों के दुख में भी रो देते हैं। 'हेम कुंभ' सूर्य की चमक और सुबह की ताजगी को साकार करता है। ये बिंब न केवल कविता की सुंदरता बढ़ाते हैं, बल्कि पाठक के मन में भारत का एक सजीव और गौरवशाली चित्र भी खींच देते हैं।

5. देवसेना और कार्नेलिया के गीतों में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार भिन्न है?
    - उत्तर: दोनों गीतों में प्रकृति का चित्रण उनके पात्रों की मनःस्थिति के अनुसार है। 'देवसेना के गीत' में प्रकृति दुखद और उदास है; वहाँ संध्या के समय श्रमकण (पसीना) आँसू की तरह गिर रहे हैं और नीरवता (खामोशी) अंगड़ाई ले रही है। यह देवसेना के आंतरिक एकाकीपन को दर्शाता है। इसके विपरीत, 'कार्नेलिया के गीत' में प्रकृति उल्लासपूर्ण और जीवंत है। वहाँ नाचती हुई तरुशिखा, शीतल मलय समीर और चमकता हुआ कुंकुम है। देवसेना के यहाँ प्रकृति दुख का साथी है, जबकि कार्नेलिया के यहाँ वह आनंद और गौरव का माध्यम है।
6. "विश्व! न सँभलेगी यह मुझसे / इससे मन की लाज गँवाई" - देवसेना के इस कथन का दार्शनिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।
    - उत्तर: देवसेना यहाँ अपनी 'थाती' (अमानत/यादें) संसार को वापस सौंप देना चाहती है। वह महसूस करती है कि वह अब अपने प्रेम और दुख के बोझ को और नहीं ढो सकती। उसे लगता है कि अपनी भावनाओं को व्यक्त करके उसने अपने मन की मर्यादा (लाज) खो दी है। दार्शनिक रूप से, यह स्थिति पूर्ण समर्पण और वैराग्य की है। जब मनुष्य अपने अहम् और इच्छाओं से पूरी तरह टूट जाता है, तब वह सब कुछ ईश्वर या जगत को सौंपकर शांति प्राप्त करना चाहता है। यह संसार से विदाई लेने की एक मार्मिक बेला है।
7. कार्नेलिया के गीत में 'लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा' पंक्ति के माध्यम से भारत की भौगोलिक और आध्यात्मिक स्थिति को कैसे जोड़ा गया है?
    - उत्तर: भौगोलिक रूप से भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा है, जहाँ दूर-दूर से आती लहरें शांत हो जाती हैं। आध्यात्मिक रूप से, इसका अर्थ है कि संसार भर के अशांत मन, जिज्ञासु और शांति की तलाश करने वाले लोग जब भारत आते हैं, तो उन्हें यहाँ एक स्थिर 'किनारा' या सत्य का ज्ञान मिलता है। यह पंक्ति भारत को केवल एक जमीन का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक

गंतव्य के रूप में प्रतिष्ठित करती है जहाँ पहुँचकर भटकते हुए विचारों और आत्माओं को विश्राम मिलता है।

8. प्रसाद के गीतों की भाषा और शिल्प की क्या विशेषताएँ हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

    - उत्तर: जयशंकर प्रसाद की भाषा संस्कृत निष्ठ (तत्सम शब्दावली) खड़ी बोली है, जो अत्यंत गरिमामयी और संगीतात्मक है। उनके गीतों में 'लय' और 'प्रवाह' का अद्भुत संगम है। उन्होंने 'रूपक', 'मानवीकरण', और 'उपमा' अलंकारों का बहुत ही सूक्ष्म प्रयोग किया है। उनके गीतों का शिल्प छायावादी है, जहाँ सूक्ष्म भावों को प्रकृति के बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। भाषा कठिन होते हुए भी भावों को गहराई से संप्रेषित करने में सक्षम है, जिससे एक गंभीर और दार्शनिक वातावरण निर्मित होता है।

9. स्कंदगुप्त नाटक में देवसेना के चरित्र का विकास उसके गीत में किस प्रकार प्रतिबिंबित होता है?

    - उत्तर: देवसेना का चरित्र त्याग और राष्ट्रप्रेम का सर्वोत्तम उदाहरण है। शुरुआत में वह एक प्रेमी हृदय रखती है, लेकिन युद्ध और विनाश के बाद उसका चरित्र दृढ़ और गंभीर हो जाता है। उसका गीत उसके चरित्र के विकास की परिणति है, जहाँ वह व्यक्तिगत सुखों को पूरी तरह त्याग देती है। वह 'भ्रम' से 'सत्य' की ओर बढ़ती है। उसका आत्म-बलिदान और स्कंदगुप्त के प्रस्ताव को ठुकराना उसकी आंतरिक शक्ति को दर्शाता है। गीत यह सिद्ध करता है कि देवसेना केवल एक राजकुमारी नहीं, बल्कि एक ऐसी विदुषी है जिसने जीवन का सार समझ लिया है।

10. आज के समय में कार्नेलिया के गीत में व्यक्त 'उदारता' और 'सहारे' की भावना की क्या प्रासंगिकता है?

    - उत्तर: आज की दुनिया में जहाँ संघर्ष और शरणार्थी समस्याएँ बढ़ रही हैं, कार्नेलिया के गीत का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। 'अनजान को सहारा देना' मानवता का सर्वोच्च गुण है। यह गीत हमें सिखाता है कि एक महान देश वही है जो अपनी सीमाओं को केवल सुरक्षा के लिए नहीं, बल्कि करुणा के लिए भी खोलता है। भारत की यह पहचान कि वह 'लहरों को किनारा' देता है,

आज के अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शांति और सहिष्णुता का आधार बन सकती है। यह गीत हमें अपनी उदार सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने की प्रेरणा देता है।

सोलंकी सर